P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर : वर्तमान में प्रासंगिकता

सुन्दरलाल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर

सारांश

भीमराव का जन्म 14 अप्रेल 1891 ई. को इन्दौर के पास महू छावनी में हुआ था। जन्म के समय उनका नाम भी रामपाल था। उनके माता–पिता भीमाबाई व रामजी सकपाल थे। महार जाति जिसमें भीमराव का जन्म हुआ वह महाराष्ट्र में अछूत समझी जाती थी। इस तरह भीमराव का बचपन संघर्षों से भरा हुआ था, उन्हें स्कूल में छुआछूत का शिकार होना पड़ा, लेकिन उन्होंने हर बार सिद्ध किया कि जीवन की हर बाधा को प्रतिभा तथा दृढ़निश्च से पार किया जा सकता है।

भीमराव कुशाग्र बुद्धि के कारण उनके शिक्षक ने उनका नाम अम्बेडकर कर दिया अब वे भीमराव अम्बेडकर कहलाने लगे, वे हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करके 1905 में बाम्बे विश्वविद्यालय से अच्छे अंकों से मैट्रिक परीक्षा पास की चार वर्ष बाद इसी विश्वविद्यालय से ही अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की, इसके बाद बडौदा महाराज द्वारा इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर इन्हें विदेश में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति प्रदान की। कोलम्बिया विश्वविद्यालय अमेरिका से एम.ए. किया अर्थशास्त्र में तथा 1917 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा लंदन विश्वविद्यालय से 1921 में मास्टर ऑफ साइंस व द बार एड लॉ की उपाधि प्राप्त कर भारत लौटे। उनका मन दलितों केस साथ हो रहे भेदभाव से उद्वेलित हुआ तो उन्होंने यह निश्चय कि या की मैं अछूतोद्धार कार्यक्रम शुरू कर हिन्दू समाज में क्रांति की शुरूआत करूंगा 1923 में बम्बई से बहिष्कृत भारत नामक पाक्षिक पत्र निकलाना प्रारम्भ किया तथा अछूतों की आवाज बुलन्द करने के लिए ''मूक नामक'' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और दलितों को संघर्ष के लिए संगठित कर उन्होंने महाड सत्याग्रह, चौदार ताल सत्याग्रह, पूना में पार्वती सत्याग्रह कर कालाराम मन्दिर में प्रवेश किया इसके बाद 1930 में अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ का गठन किया तथा गोलमेज सम्मेलन में दलितों के हितों को सुरक्षित रखने की मांग उठाई और दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल प्राप्त कर लिया, परन्तु गाँधी जी इससे आमरण अनशन पर बैठ गये तो 1932 मे पूना समझौता किया 1942 में अखिल भारतीय दलित महिला सम्मेलन बुलाया व भारतीय संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान किया, इसमें दलित हितों को प्रतिनिधित्व सुरक्षित किया।

मुख्य शब्द : बौद्ध धर्म, डॉ.अम्बेडकर, भाग्यवाद, खंडन, जीवन पद्धति, समाज, मानवता, सत्याग्रह, दलित वर्ग, सामाजिक प्रणाली।

प्रस्तावना

डॉ. अम्बेडकर का बौद्ध धर्म अपनाना व हिन्दू धर्म छोड़ने के कारण डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि धर्म व्यक्ति को उन्नति की ओर शिक्षित कर प्रबुद्ध बनाता है। परन्तु हिन्दू धर्म मेंनिम्न जातियों की इस धर्म में निराशा अंधकार व अपमान के साथ घृणा व उपहास का पात्र बना दिया। मनुष्य को अपने धर्म के प्रति वफादार होना चाहिए, लेकिन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि अपनी पसंद, स्वतंत्रता तथा युक्ति के आधार पर किसी धर्म की परीक्षा उसकी आस्था व रहस्यवाद से नहीं होती बल्कि व्यवहार व परिणामों से होती है। धर्म की भूमिका उसके द्वारा किये जाने वाले अंधविश्वासों, आस्थाओं, अनुष्ठानों एवं दैनिक अभिव्यक्तियों की व्यवस्था की दृष्टि में निहित नहीं होती बल्कि अपने सभी मानव प्राणियों में बन्धुत्व की भावना समानता समरसता सहभागिता सद्भाव बनाये रखने में हैं जिसमें जाति, सम्प्रदाय, धन, जन्म, लिंग, स्थान के बंधन टूट जाए।

धर्म एक ऐसा संदेश है जो आत्मा एवं ईश्वर की एकता या आदमी की ईश्वर की एकता में नहीं अपितु मनुष्य–मनुष्य में एकता स्थापित करे। हिन्दू धर्म ऐसा धर्म है जिसके अन्तर्गत आस्था एवं अर्चना के पुरातन रूपों की जटिलता, विविधता, धार्मिक मान्यताओं के दुराग्रही रूप देवी देवताओं की बड़ी संख्या पायी जाती है। जिसे आज तथाकथित धर्म की संज्ञा दी जाती है। जैसे ईश्वर, आत्मा,

अवतार, आवागमन, पूजा अर्चना, तीर्थ यात्रा, अनुष्ठान, पवित्रता, शास्त्रों की अकाट्यता दैवीय सत्ता को अम्बेडकर ने अस्वीकार किया। डॉ. अम्बेडकर इस विचार से सहमत नहीं थे कि धर्म व्यक्तिगत होता है, सके अनुसार धर्म भाषा के समान सामाजिक होता है। निःसंदेह हिन्दू धर्म में अनेक लौकिक एवं पारलौकिक विचारोंका संगम मिलता है, जिसे आसानी से समझना कठिन है। लेकिन डॉ. अम्बेडकर जैसे समीक्षक ने हिन्दू धर्म का गहन अध्ययन –मनन करके यह पाया कि इसमें बहुत से ऐसे अवगुण हैं जो समानता, स्तंत्रता, बंधुत्व, नैतिकता, न्याय जैसे आदर्शों हनन करते हैं। डॉ. अम्बेडकर स्वयं हिन्दू परिवार में जन्में, पर समाज में वर्ण, जाति, छूआछूत आदि के कारण उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ठ उठाये, अपमान सहे वे प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी एक शूद्र अछूत ही माने गये। इसलिए उन्होंने हिन्दू धर्म के परित्याग का निर्णय किया। यह निर्णय हिन्दू धर्म, समाज एवं सिद्धान्तों की ठोस समीक्षा पर आधारित है।

इस प्रकार उन्होंने हिन्दू धर्म के आधार ग्रंथों को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उनमें लौकिक न्याय, समानता एवं उपयोगिता की बातें कम और पारलौकिकता की वकालात अधिक है जो आम आदमी के हित में नहीं है। अतः उन्हांने कोई ठोस प्रमाण न मिलने पर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया। डॉ. साहेब की मान्यता थी कि ईश्वर में विश्वास भाग्यवाद पारलौकिकता तथा अकर्मण्यता को बढ़ावा देता है जिससे आदमी का महत्व कम हो जाता है। ईश्वर के साथ–साथ डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म में अमर–अजर आत्मा की मान्यता को भी स्वीकार नहीं किया, क्योंकि जगत में कुछ स्थाई नहीं है। ईश्वरवाद तथा आत्मवाद के खंडन के साथ–साथ डॉ. अम्बेडकर ने अवतारवाद तथा आवागमन के सिद्धान्तों को भी अमान्य कर दिया। हिन्दू धर्म का कर्म–सिद्धान्त बदले की भावना पर आधारित है जो सामाजिक दायित्व का हनन करता है।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिन्दू धर्म में नैतिकता का अभाव है, क्योंकि वह परमानन्द पर जोर देता है जो जीवन के निषेध की ओर ले जाता है। हिन्दू धर्म अनिवार्यता पारलौकिक है, जबकि आचार–नीति तथा पारलौकिक एक दूसरे के विरोधी है। हिन्दू धर्म वर्ण व्यवसाय को श्रेणीबद्ध (एक के ऊपर एक वर्ण) होने के नाते, समानता का विरोध कहा है। वर्ण व्यवस्था में पैतृक धंधों को ही करना पडता है, भले ही कोई कितना ही दक्ष हो वह अन्य धंधा नहीं कर सकता। इसीलिए डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि यह व्यवस्था समानता व स्वतंत्रता की घेर शत्रु है। डॉ. अम्बेडकर ने यह भी पाया कि हिन्दू धर्म में संस्कारों को लेकर भी भेदभाव की नीति है। शूद्र को प्रायः सभी महत्वपूर्ण संस्कारों से वंचित रखा गया है।

डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म की आश्रम व्यवस्था को भी अत्यन्त भेदभाव माना, क्योंकि उसमें शूद्र एवं स्त्रियों को सन्यास आश्रम में जाने का अधिकार नहीं है। हिन्दू धर्म को डॉ. अम्बेडकर ने एक धर्म न मानकर एक षंडयंत्र की संज्ञा दी, क्योंकि इसकी समाज व्यवस्था में कुछ लोग (ब्राह्मण) तो सदैव श्रेष्ठ बने रहें। हिन्दू धर्म में पुरोहितवाद का भी एक ऐसा स्थान है जिसके अनुसार श्रेष्ठ कहे जाने वाले ब्राह्मण ही पुरोहित बन सकते है। समस्त धार्मिक संस्कार इन्हीं के द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं।

संक्षेप में हिन्दू समाज व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है, जो वर्णों पर आधारित है, न कि व्यक्तियों पर। यह वह व्यवस्था है, जिसमें वर्णों को एक दूसरे के ऊपर श्रेणीबद्ध किया गया है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें वर्णों की प्रतिष्ठा तथा कार्य–निर्धारण निश्चित है। हिन्दू समाज व्यवसथा एक कठोर सामाजिक प्रणाली हे। इस बात से उसे कोई लेना–देना नहीं कि किसी व्यक्ति के पद और प्रतिष्ठा में अपेक्षाकृत परिवर्तन हो, लेकिन वह जिवस वर्ण में पैदा हुआ है। उस वर्ण के रूप में उसकी सामाजिक स्थिति दूसरे वर्ण के दूसरे व्यक्ति के संदर्भ में किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होगी।

अध्ययन का उद्देश्य

1. डॉ. अम्बेडकर के धर्म के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचारों से अवगत कराना।
2. धर्म के बारे में व्यापक, बहुविध विवेकपूर्ण तर्कशक्ति की क्षमताएँ विकसित करना।
3. महात्मा बुद्ध के उपदेशों की परमोज्ज्वल भावना जो जीवन में पथ प्रदर्शक का काम करेगी उसे केन्द्र बनाकर समस्त विचारों को सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित करना।
4. मानसिक सजगता, निश्चलात का परिपूर्ण शांति का जीवन जीने की राह दिखाना।
5. बौद्ध धर्म की वर्तमान में प्रासंगिकता से अवगत कराना।

डॉ. अम्बेडकर एवं बौद्ध धर्म के सिद्धान्त

डॉ. अम्बेडकर बौद्ध धर्म के पंचशील का अनुसरण करते समय आदमी सचेत होता है। स्वतंत्र व उत्तरदायी भी बनता है, शील आधार धर्म होता है अर्थात् सही कर्म पंचशील के अतिरिक्त करूणा और मैत्री के उदाहरण हमारे समक्ष है, करूणा का अर्थ है अन्य प्राणियों के प्रति दयावान होना तथा मैत्री का अर्थ है समस्त जीवित प्राणियों के प्रति मित्र होना। ये सामान्यतया सभी के कल्याण हेतु अनुशरण करने योग्य आदर्श है। शील समस्त शुभ की जननी है। अहिंसा का करूणा एवं मैत्री घनिष्ठ संबंध है बौद्ध जीवन पद्धति में कोई निश्चित कठोर नियम नहीं है जैसा कि हिन्दू इस्लाम जैन सिक्ख धर्म में मिलते हैं। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा का उपदेश देते हुये हिंसा की इच्छा और हिंसा की आवश्यकता में भेद किया है उन्हांने हिंसा को वहा प्रतिबंधित नहीं किया जहां हिंसा की आवश्यकता हो जैसे शेर का सामना करना पड़े तो वहां हिंसा की संभावना है।इस तरह अहिंसा एक जीवन पद्धति जो आपको सचेत तथा दायित्वपूर्ण कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

बौद्ध धर्म ऐसा धर्म है, जो इन चार विशेषताओं की सम्पूर्ति करता है। बौद्ध धर्म अहिंसा के अतिरिक्त सामाजिक स्वतंत्रता, बौद्धिक स्वतंत्रता आर्थिक स्वतंत्रता और राजनैतिक स्वतंत्रता की बतायी गई, बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में जीवन के सभी सच सम्मिलित है। बोद्ध धर्म का मौलिक उद्देश य दुख की स्थिति को समाप्त करना है। लोगों को भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सुदृढ़

बनाना है, यह केवल बौद्ध लोगोंके बन्धुत्व में ही विवास नहीं करताबल्कि विश्व शान्ति व विश्व बन्धुत्व उसका प्रमुख ध्येय है।

भगवान बुद्ध प्रथम सुधारक को जिन्होंने हिन्दु समाज के आदर्शों की पूर्ण समीक्षा की उन्होंने वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया और हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों में आवश्यक परिवर्तन किये क्योंकि इन दोनों ही सिद्धान्तों में भाग्यवाद व जातिवाद की ओर गिरने की प्रवृत्तियाँ निहित थी बौद्ध धर्म में सभी निर्धन शोषित लोगों के लिए स्वतंत्रता एवं समानता की मांग को स्वयं महात्मा बुद्ध ने बिना किसी भेदभाव के उपाली–सुनिति, सुप्राबुद्ध सोपाल सुप्पिया जैसे निम्न जाति वालें को अपने धर्म में शामिल कर बौद्ध संघ में ले लिया, बुद्ध का यह आन्दोलन बहुत प्रभावशाली था नवीन समाज की स्थापना के लिए संदेश था, उन्होंने समता व मत्री के सिद्धान्तों पर बल दिया और अनावश्यक भेदभावों की कड़ी आलोचना की। बौद्ध धर्म का मुख्य केन्द्र मनुष्य व समाज है उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन से दुख का अन्त होना चाहिएं भगवान बुद्ध का धर्म मनुष्य को ईश्वर के हाथ में नहीं छोड़ता मनुष्य को स्वयं अपने भाग्य का निर्माता बनता है। बौद्ध धर्म सामाजिक धर्म है इसका प्रथम नैतिक सिद्धान्त माध्यम मार्ग है वे दुख को समाप्त करने के लिए विधि अष्ठांगिक मार्ग बताया है।

बौद्ध धर्म का सर्वोत्तम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना हे। निर्वाण का तात्पर्य जीवन का अन्त नहीं यह भोगविलास राग–द्वेष लोभ लालच की भावनाओं का पूर्ण अंत हो, उसके दूखों का अन्त है व परम शांति की प्राप्ति हो जाती निर्वाण प्राप्त करके व्यक्ति हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा रहता है, तथा निर्वाण मतलब जीवन में जड़ता व निष्क्रिय नहीं होना बल्कि मानव कल्याण के लिए प्रचार–प्रसार करना है, जैसा कि महात्मा बुद्ध ने किया। महात्मा बुद्ध ने पांच सदाचार के सिद्धान्त बताये हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य ये सिद्धान्त मनुष्यों में त्याग बल, सहनशीलता, धैर्य सदकामना समरसता व एक–दूसरे के प्रति सम्मान तथा बन्धुत्व की भावना उठाते हैं। बौद्ध धर्म का अंष्ठागिंक मार्ग आदर्शों का विषय है न कि नियमों का मैं सभी के लिए संतुलन है ये शांति तथा सवतंत्रता स्वेच्छा के ढंग है। इस तरह बौद्ध जीवन पद्धति में अकुशल कर्मों का परित्याग तक आदर्श रूप है इनको करने से समाज व्यवसथा सुचारू रूप से चलेगी और स्वयं कर्ता भी लाभान्वित होगा। बौद्ध कर्म सिद्धान्त ईश्वरीय तथा दैवीय शक्तियों से स्वतंत्र है।

बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन

विश्व धर्मों का विवरण एवं समीक्षा करने के पश्चात यह स्पष्ट होना स्वाभाविक है कि डॉ. अम्बेडकर ने सभी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक तथा राष्ट्रीय पक्षों को अपने ध्यान में रखना ही बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का निर्णय किया। डॉ. अम्बेडकर शांति सदाचरण और नैतिक उत्कृष्टता इसी दुनिया में प्राप्त करना चाहते थे। किसी अन्य संसार में नहीं चाहे वह हिन्दू का स्वर्ग ही चाहे ईसाई का ईश्वरीय साम्राज्य और चाहे अल्लाह का शासन हो। ईश्वरीय धर्मों की मोक्ष संबंधित अवधारणा न्याय और उपयोगिता के मानदण्डों की समपूर्ति नहीं कर पायी इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने उन्हे अस्वीकार करा दिया इनका मूल उद्देश्य मानव मन और उसके प्रयास को इस प्रकार दीक्षित एवं सयंत करना है कि स्वतः उत्थान करना चाहिए इस तरह डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को ही एक सम्यक मार्ग के रूप में अपनाया जो मानव जाति की सम्पूर्ण समाज में एक ऐसी नयी चेतना और नये आवरण के मानदण्ड पैदा कर सकता है, जिससे समस्त मानवता को लाभ हो।

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को क्यों अपनाया

मैं आज के अपने भाषण में इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर कि मैंने भगवान बुद्ध के चलाये हुए वर्ग का पुररूद्धार तथा प्रचार के महान कार्यभार को अपने कंधों पर क्यों लिया है ? अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। कई विचारशील व्यक्तियों का और मेरा अपना विचार है कि कल धर्मान्तरण समारोह आज होना चाहिए था और आज का यह धर्म परिवर्तन अभिभाषण धर्मान्तरण समारोह से पूर्व कल होना चाहिए था। किन्तु जो होना था सो होगया। अब आज इस प्रश्न पर विचार करना कोई महत्व रखता है। महात्मा बुद्ध के धर्म को ब्राह्मणों ने भी अपनाया और शूद्रों ने भी, उन सभी भिक्षुओं को आदेश देते हुए महात्मा बुद्ध ने कहा था कि–

''हे भिक्षुओं ! आप लोग कई देशों और कई जातियों से आऐ हुए हैं। जिस प्रकार आपके देश–विदेश में अनेक नदियां बहती है और उनका अलग–अलग अस्तित्व दिखाई देता है। जब ये सागर में मिलती है तब अपने पृथक अस्तित्व को खो बैठती है। वे सब समुद्र में समा जाती है। बौद्ध धर्म समुद्र की ही भांति है। इस संघ में सभी एक हैं और सभी बराबर है। समुद्र में गंगा या यमुना के मिल जाने पर उसके पानी को अलग पहचानना कठिन है। इसी प्रकार आप लोगों के बौद्ध संघ में आने पर सभी एक हैं। सभी समान हैं।'' इस प्रकार की बातें कहने वाला एक ही महापुरूष महात्मा बुद्ध है।

कुछ लोग कहेंगे कि अछूतों के बौद्ध बनने पर क्या होगा ? इस संबंध में मेरा इतना ही कहना है कि इस प्रकार का प्रश्न आप लोगों को नहीं पूछना चाहिए, क्योंकि ऐसे प्रश्न धूर्ततापूर्ण है। अमीर लोगों को धर्म की आवश्यकता नहीं है। उनमें जो लोग ऊचें पदों पर है उनके पास रहने के लिए अच्छा बंगला है। उनकी सेवा करने के लिए उनके पास धन है। उने पास नौकर–चाकर हैं उनके पास सब कुछ है। ऐसे लोगों को धर्म को अपनाने का उस पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

धर्म की आवश्यकता केवल गरीबों के लिए होती है। दुःखी और पीड़ित लोगों के लिए धर्म की जरूरत होती है। गरीब मनुष्य सदा ही इसी आशा पर जीवित रहता हैं जीवन का मूल आशामें है। अगर यह आशा नष्ट हो गई तो जीवन कैसे चलेगा ? धर्म हर एक को आशावादी बनाता है। गरीबों और पीड़ितों को सही संदेश देता है कि ''घबराने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि जीवन आशादायक है और हेागा'', यही कारण है कि गरीब या पीड़ित व्यक्ति धर्म को चिपकाकर रखता है।

उपर्युक्त भाषण एवं प्रतिज्ञाओं से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर ने अन्य धर्मों की तुलना में

बौद्ध धर्म को ही क्यों स्वीकार किया। बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का एक अंग है। यह धर्म उनकी बौद्धिक जिज्ञासा को संतुष्ट कर सका और डॉ. साहेब ने भी कुछ मार्ग को लोककल्याणकारी माना जो आदमी को ईश्वरवाद, परलोकवाद, आत्मा–मोक्ष, आवागमन, अवतारवाद, पूजा–पाठ, देवी–देवतावाद, नरक–स्वर्ग आदि के झमेलों में न फंसाकर समाज में ही रहकर मानव प्राणियों को शुभ अथवा सम्यक कर्म करने के लिए सम्प्रेरित करता है ताकि वर्तमान समाज व्यवसथा सर्वहित में काम करें। इसी कारण डॉ. अम्बेडकर ईश्वरवादी, चमत्कारी, उद्घाटित, आत्मावादी तथा घोर परलोकवादी धर्मों की ओर नहीं जा पाए। संक्षेप में, यह इस धरती पर ही आदमी के कल्याण के पक्षधर बने रहे।

यह सामान्यतः माना गया है कि धर्म का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है और यह एक सामाजिक शक्ति बन चुका है। धर्म आदमी तथा समाज के लिए अनिवार्य है। डॉ. अम्बेडकर ने इस दृष्टिकोण का पूर्णतः समर्थन किया और वह एडमण्ड वर्क के साथ एहमत हुए जब बर्क ने कहा, ''सच्चा धर्म समाज की आधारशिला है, वह आधार जिस पर समस्त सच्ची सरकार अवलम्बित होती है और दोनों की मान्यता उसी पर आश्रित है।'' निस्संदेह डॉ. अम्बेडकर का धर्म में अटूट विश्वास था, किन्तु उन्हें किसी सच्चे धर्म की तलाश थी जो धर्म नियमों की अपेक्षा आदर्शों पर आधारित हो। यह स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर ऐसे धर्म के पक्ष में थे जो 'बुद्धि' और उत्तरदायित्व पर आधारित हो। वस्तुतः बुद्धि एवं उत्तरदायित्व दोनों ही आदर्शों के धर्म में संभव है। क्योंकि उसमें आदमी की पसन्द तथा स्वतंत्रता के लिए स्थान है। उदाहरण के लिए सत्य के आदर्श को ही लें।

यदि उसे आदर्श का विषय बनाया जाता है, तो आदमी स्वतंत्र है यह विचार करने के लिए सत्य बोला जाय या झूठ। यहां आदमी के समक्ष दो विकल्प है। वह किसी एक को चुन सकता है।

बौद्ध धर्म नैतिकता, भोग परायणता तथा आत्मदमन के बीच एक मध्य मार्ग है। यह न सुखवाद का समर्थक है, न सन्यासवाद का। सुख की इच्छा अहम् से जागृत होती है। जब अहम् ही नष्ट हो जाता है तो सांसारिक और स्वर्गीय सुखों की प्यास बुझ जाती है। दूसरी ओर भोगपरायणता पतनकारक है बौद्ध नीतिशास्त्र का मूल मन्त्र अहिंसा है। विचवार, शब्द और कार्यों से किसी को चोट न पहुंचाना, प्रेम, सदिच्छा, धीरज, सहनशीलता, करूणा तथा आत्मशुद्धि ऐसे गुण हैं जिनका विकास किया जाना चाहिये। बुद्ध ने विचारों और आचरण की पवित्रता सभी मनुष्योंकी समानता, स्वतंत्र चिंतन एवं स्वयं निर्णय करने की क्षमता तथा सभी दृष्टियों से मनुष्य के स्वावलम्बी ाहेने की आवश्यकता को विशेष महतव देकर मानव समाज का समुचित मार्गदर्शन किया हैं

बुद्ध ने मनुष्य के अपने प्रयास को ही उसकी मुक्ति का एकमात्र उपाय माना है। उनका विचार था कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं ही निर्माण कर सकता है। अतः इसके लिये उसे अपनी बाह्य शक्ति का आधार लेने की आवश्यकता नहीं है। इस स्वालम्बपन के साथ–साथ बुद्ध ने मनुष्य के लिए यह भी आवश्यक माना है किवह स्वय स्वतंत्र रूप से विचार करके अपने जीवन का मार्ग निश्चित करे, किसी अन्य व्यक्ति के आदेश द्वारा नहीं। डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक जीवन में धर्म की शक्ति का स्वीकारे किया क्योंकि उन्होंने यह पहचाना कि धर्म सामाजिक मूल्यों पर बल देता है, उप्न्हें सार्वभौमिक बनाता है, और व्यक्ति के मन में स्थापित करता है, जो उन्हें अपने समस्त कार्यों में स्वीकारता है ताकि वह समाज के एक प्रामाणिक सदस्य के रूप में कार्य कर सके। डॉ. अम्बेडकर ने जीवन के सच्चे धर्म की आवश्यकता पर बल दिया।

बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता

धर्म मनुष्य भावनात्मक और विचारात्मक एकता के सूत्र में बाँधकर संगठन पैदा करता है। आज का दलित और शोषित धर्म की दृष्टि से बिखरा हुआ है। कोई राम को मानता है तो कोई कृष्ण को, कोई शंकर का पूजता है तो कोई हनुमान को, काई दुर्गा कोमानता है तो कोई वैष्णव को , कोई कबीर को मानता है तो कोई रैदास को, कोई नानक पंथ पर चता है तो कोई राधास्वामी पर, कोई भूत पूजता है तो कोई चुडैल को, इस प्रकार दलितों ओर शोषितों के हजारों देवी–देवता है। जिनमें फलस्वरूप ये लोग आज भी बिखरे पड़े है। इतने ही नहीं हिन्दू धर्म के मानने से इनमें अंधविश्वास, पाखण्ड, अज्ञान, अविद्या गरीबी और सामाजिक पिछड़ापन है, जिसके फलस्वरूप इनका जीवन पल–पल पशु पालन समान और नारकीय होता चलाता रहा है। ऐसी स्थिति समस्त दलितों और शोषितों को पाखंड, अंधविश्वास शोषण और उत्पीड़न से परिपूर्ण हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म अपना लेना चाहिए।

बौद्ध धर्म ही ऐसा धर्म है, जो दलितों का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति और पशुओं का कल्याण तथा पेड–पौधों का संरक्षण कर सकता है। हिन्दू धर्म अँधेरी कोठरी के समान है। जिसमें विनाश और मृत्यु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, जबकि बौद्ध धर्म का आधार प्रज्ञा, शील, मैत्री और करूणा आदि मूल्य है, जिससे सम्पूर्ण जगत का कल्याण संभव हो सकता है। बौद्ध धर्म खुले आसमान और सुगंधित वातावरण की भाँति है, जिसमें मानव जाति जितना चाहे अपना विकास और उन्नति कर सकती है। बौद्ध धर्म में सभी व्यक्ति समान है। प्रत्येक व्यक्ति समानता, स्वतंत्रता बन्धुत्व और न्याय के वातावरण में रहता है। उसे शिक्षा और व्यवसाय का पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है। इस धर्म में किसी भी प्रकार का भेदभाव और छूआछूत का प्रावधान नहीं है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राकृतिक गुणों का पूर्ण विकास कर सकता है। बौद्ध धर्म में नैतिक मूल्यों का नियंत्रक मनुष्य स्वयं है और ईश्वर या खुदा आदि नहीं है। इसलिए बौद्ध धर्म की नैतिकता अन्य धर्म की नैतिकता से सर्वश्रेष्ठ है। यह धर्म वैज्ञानिक होने के कारण इसमें किसी भी प्रकार के पाखण्ड अंधविश्वास, आडम्बर आदि नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से यह धर्म बुद्धिवादी, मानवतावादी और उपयोगितावादी है। बौद्ध धर्म का तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान उच्चकोटि का उत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ है।

निष्कर्ष

डॉ. अम्बेडकर व बौद्ध धर्म का क्षेत्र जो मैंने पूर्व पृष्ठों में विश्लेषित एवं मूल्यांकित कियाहै इससे कहीं अधिक व्यापक हैं कहीं अधिक विस्तृत एवं विराट है, इसमें बहुत वस्तुतः उसके सभी पक्षों को सम्मिलित करने के लिए सम्पूर्ण एवं विस्तृत गंथ की आवश्यकता है, गंभीर और कर्मनिष्ठ विद्वानों को इसके विविध पक्षों को अनुसंधान का विषय बनाना चाहिए मैंने डॉ. अम्बेडकर के धर्म के कुछ पक्ष स्पष्ट कर पाया हूँ कि वे पूर्वग्रहों तथा पूर्वमान्यताओं के बिना उन्हें मूल्यांकित करें और लौकिक आदमी से जोड़कर उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता भी देखें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *एन.के. देवराज – हिन्दूइजम एण्ड क्रिस्टयनिटी, 1969*
2. *एफ, एंगेला –एण्टी, डयूहरिंग मास्कों 1959*
3. *एस.राधाकृष्णन – द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, 1949*
4. *एस. राधाकृष्णन – रिकवरी ऑफ फेथ 1967*
5. *के.एन. तिवारी – सफरिंग–इण्डिय पर्सपैक्टिब्ज (संपादित), 1986*
6. *कार्ल मार्क्स– द फेमस लास्ट थीसीस ऑन फायरबाख (ग्यारहवीं)*
7. *खुर्शीद अहमद – स्टडीज इन इस्लामिक इकोनोमिक्स (संपादित) 1983*
8. *टेलरस बुक – द फेथ ऑफ ए मोरलिस्ट, गिफ्फोर्ड, लैक्चर्स, 1926–27, लंदन 1930*
9. *डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर – राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, वोल. 3, 1987*
10. *डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर – राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, वोल. 4, 1987*
11. *डॉ. बाबासाहेब, अम्बेडकर–राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, वोल. 5, 1987*
12. *डीन इन्जे– द प्लेटोनिक ट्रेडिशन इन इंगलिश रिलिजियस थॉट, 1926*
13. *डी.सी. अहीर – द लीगेसी ऑफ डॉ. अम्बेडकर, 1991*
14. *डी.आर. जाटव – द इवॉल्यूशन ऑफ इण्डियन सोशल थॉट, 1987*
15. *डी.आर. जाटव – भगवान बुद्ध और कॉर्ल मार्क्स, 1991*
16. *दत्ता/चटर्जी – एन इन्ट्रॉडक्शन टू इण्डियन फिलॉसफी, 1982*
17. *धनन्जय कौर – डॉ. अम्बेडकर –लाइफ एण्ड मिशन, 1918*
18. *प्रशान्त मेदालंकार – धर्म का स्वरूप ,1983*
19. *पी.एल. नरासू – द एसेन्स ऑफ बुद्धिज्म 1948*
20. *बी.आर. अम्बेडकर – एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, 1944*
21. *बी.आर. अम्बेडकर – बुद्ध एण्ड द फ्यूचर ऑफ हिज रिलिजन (लेख) 1950*
22. *बी.आर. अम्बेडकर – द बुद्ध एण्ड हिज धम्म् 1957*
23. *विश्व के प्रमुख धर्म, भारत सरकार नई दिल्ली, 1988*